Artistic Narration Vol. XIII No. 2 July-Dec. 2022 ISSN (P): 0976-7444 (e): 2395-7247
Impact Factor 8.851 (SJIF)

अर्पणा कौर जी की चित्रकला की तकनीक

डॉ० राजकुमार जयंत
ईमेलः rajkumarsirohi@gmail.com

Reference to this paper should be made as follows:

डॉ० राजकुमार जयंत

अर्पणा कौर जी की चित्रकला की तकनीक

Artistic Narration 2022, Vol. XIII, No. 2, Article No. 23 pp. 155-159

https://anubooks.com/journal-volume/artistic-narration-2022-vol-xiii-no2

सारांश

अर्पणा कौर का जन्म 4 सितंबर 1954 को दिल्ली के एक सुसंस्कृत सिख परिवार में हुआ था। बंटवारे के समय यह परिवार लाहौर से आकर यहां दिल्ली के पटेल नगर में बस गया था। इनके पिता स्वर्गीय श्री राजेंद्र सिंह जी दुर्भाग्यवश अपनी पुत्री अर्पणा कौर को मात्र 3 वर्ष की आयु में छोड़कर भगवान को प्यारे हो गए मात्र 3 वर्ष की आयु में ही पिता का साया उठ जाने के बाद इनकी मां श्रीमती अजीत कौर जी जो कि एक प्रसिद्ध लेखिका व साहित्यकार हैं ने ही इनका लालन–पालन किया इनकी शिक्षा दिल्ली में ही अपनी मां अजीत कौर जी की स्नेह मई छत्रछाया में हुई।

डॉ० राजकुमार जयंत

अपना कौर जी की कला पृष्ठभूमि

अर्पणा कौरजी मात्र 3 वर्ष की उम्र से ही चित्रकारी कर रही हैं जैसे बचपन में घर की दीवारों पर यह कोयले वह खडीए आदि से कुछ न कुछ करती रहती थी तो दीवार खराब करने पर कभी मा ने डांटा नहीं बल्कि और प्रोत्साहित किया वह ड्राइंग करने के लिए कागज पेंसिल व रंग आदि ला कर दिए इनकी मां ने इनके भीतर छिपे कलाकार को पहचान कर उसे बाहर की दुनिया में आगे बढ़ने की राह दिखाई और आगे बढ़ने को सदा प्रोत्साहित किया इसीलिए अर्पणा जी आज एक वरिष्ठ व प्रसिद्ध चित्रकार हैं।

अर्पणा कौर जी की चित्र कला के माध्यम एवं तकनीक का प्रस्तुतीकरण इस प्रकार है प्रारंभ से अर्पणा कौर जी का माध्यम तेल रंग और कैनवस रहा है कागज़ पर कार्य करने में इतना आनंद नहीं आता जितना कैनवस पर काम करने में आता है करीब सन 1984 में इन्होंने एक्रेलिक रंगों का भी प्रयोग किया क्योंकि एक्रेलिक जल्दी सूख जाते हैं जबकि तेल रंग सूखने में काफी समय लेते हैं इन्हें एक्रेलिक रंग से काम करने में बिल्कुल भी आनंद नहीं आया इन्हें तेल रंग का वजन ब्रश पर बहुत पसंद है ऐसा नहीं कि इन्होंने कागज पर बिल्कुल भी चित्रण नहीं किया इनकी सन 1985 की प्रदर्शनी में काफी पेंसिल ड्राइंग प्रदर्शित हुई है इस सब के बाद अर्पणा कौर जी ने काफी ग्लास पेंटिंग बनाई 1988 में प्रदर्शित हुई। यह तेल के साथ–साथ दूसरे माध्यमों में भी चित्रण करती रही हैं जैसे ग्लास पेंटिंग पेंसिल ड्राइंग आदि सन 1981 मेंअम्ल लेखन चित्रकला शुरू की और लगातार 15 वर्षों तक इन्होंने कभी सामग्री की गुणवत्ता पर समझौता नहीं किया हमेशा ही इनकी माता श्रीमती अजीत कौर जी ने इन्हें प्रोत्साहित किया और कभी भी कला सामग्री से समझौता नहीं करने दिया वह सदैव ही आर्टिस्ट क्वालिटी के रंग ही प्रयोग करने की सलाह देते हैं। आपको अपारदर्शी रंग पसंद है इन्हें पारदर्शी रंग पसंद नहीं। किसी भी कलाकार की कला में सबसे महत्वपूर्ण होता है उसके कार्य करने की तकनीक प्रत्येक कलाकार की तकनीक अलग–अलग होती है जिनसे उस कलाकार की कार्य करने की शैली उसकी सोच आदि का पता चलता है यहां अर्पणा कौर जी के माध्यम तकनीक और सामग्री का प्रस्तुतीकरण है प्रारंभ से अर्पणा कौर जी का माध्यम ऑयल पेंटिंग और कैनवस रहा है कागज पर कार्य करने में इतना आनंद नहीं आता जितना कैनवस पर काम करने में आता है क्योंकि कैनवस की सतह लचीली होती है और वह बहुत पसंद है क्योंकि वह ब्रश के दबाव से अंदर बाहर हो जाता है इन्हें एक्रिलिक रंग से काम करने में बिल्कुल भी आनंद नहीं आया इस तथ्य को समझाने के लिए अर्पणा जी एक बहुत अच्छा उदाहरण देती हैं जैसे– हम टूथब्रश पर कोलगेट लगाते हैं उस कोलगेट का कुछ वजन होता है जिसका हम आनंद लेते हैं अगर टूथपेस्ट लिक्विड हो तो क्या आप कोलगेट का आनंद उठा पाएंगे अर्पणा कौर जी तो उसको कभी प्रयोग नहीं करेंगे ठीक इसी प्रकार एक्रेलिक कलर का ब्रश पर वजन नहीं होता जैसा कि कोलगेट का वजन होता है इन्हें तेल रंग का कैनवस पर वजन बहुत पसंद है।

ऐसा नहीं कि उन्होंने कागज पर बिल्कुल भी चित्र नहीं किया इनके सन 1985 में दिल्ली के प्रदर्शनी में जिसका नाम वर्ल्ड गोज ऑन रखा गया था में इनकी कॉफि पेंसिल ड्राइंग प्रदर्शित हुई जो मुंबई में भी प्रदर्शित हुई फिर इस सब के बाद अपना कौर जी ने काफी ग्लास पेंटिंग भी बनाई जो सन 1988 में प्रदर्शित हुई वह तेल चित्रण के साथ–साथ दूसरे माध्यमों में भी चितरण करती रही हैं जैसे ग्लास पेंटिंग पेंसिल ड्राइंग आदि आदि। ग्लास पेंटिंग रिवर्स गलास के पीछे की सतह में करती थी और फ्लेक्सी ग्लास प्रयोग करती थी वह आयातित फाइबर ग्लास प्रयोग करती थी जो यह पुरानी दिल्ली में पहाड़गंज से लाती थीं। आयातित फाइबर ग्लास इसलिए प्रयोग करती थी ताकि उस में फफूंदी आदि न आ पाए। सन 1981 में अर्पणा जी ने अम्ल लेखन चित्र शुरू की और लगातार 15 वर्षों तक और अधिकतर ब्लैक एंड वाइट रचना की रंगीन भी किए हैं सन 1985 में कृष्णा रेड्डी जी आए थे उनकी एक खास तकनीक है विस्कोसिटी जो उन्होंने और स्टरली हेटर ने शुरू की थी यह तकनीक को बहुत पसंद आई तब कृष्ण जी की गढ़ी में वर्कशॉप थी उस समय अर्पणा जी वर्कशॉप में तो आमंत्रित नहीं थी क्योंकि ये केवल एक पेंटर थीं। अर्पणा जी लोगों के कंधे के ऊपर से देखती रहती थी। जब वर्कशॉप खत्म हुई तो उन्होंने लगातार कठिन परिश्रम करके 5 महीने तक अम्ल लेखन तकनीक पर कार्य किया वह 5 महीनों में पांच रंगीन चित्र बनाएं और कुछ रंगीन प्रिंट निकाले जो काफी सराहे भी गए इन्हें बहुत हैरानी होती थी जब इनके अमल प्रिंट किसी अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी में चुने जाते थे लेकिन फिर भी अर्पणा जी ने अपने आप को कभी प्रिंट मेंकर नहीं माना क्योंकि इस तकनीक में कार्य करना तो इनके लिए मात्र प्रयोग भर ही था इसे इन्होंने मात्र अनुभव प्राप्त करने के लिए ही किया था। इन्होंने 15 वर्षों तक प्रिंट मेकिंग की क्योंकि इस दौरान यह गढ़ी में रहीं और 15 वर्षों में अर्पणा जी ने पांच रंगीन चित्र व कम से कम 20 ब्लैक एंड वाइट चित्र बनाए। कॉलेज ऑफ आर्ट्स में भी उन्होंने दो वर्कशॉप में हिस्सा लिया लेकिन फिर भी यह सब अर्पणा जी के लिए तेल चित्रण से कम महत्वपूर्ण है उन्होंने सदैव तेल चित्रण को ही महत्व दिया क्योंकि इन्हें हमेशा से ही कैनवस की बड़ी सतह पसंद रही है। वह बड़े–बड़े कैनवस पर चित्रण करना पसंद रहा है अर्पणा जी अपने चित्रों में आदम कद कलाकृतियां बनाना पसंद करती रही हैं।

तेल रंग करने की तकनीक

सबसे पहले अर्पणा जी कैनवस पर आधा तारपीन और आधा अलसी के तेल का मिश्रण तैयार करके पहला कोट करती हैं और उसे दो–तीन हफ्ते तक सूखने के लिए छोड़ देती हैं सूखने के बाद उस कैनवास पर पेंटिंग शुरू करती हैं साधारणतया 3 कोट में इनकी पेंटिंग पूरी होती हैं पहले कोट में आधा तारपीन आधा अलसी का तेल इस्तेमाल करती हैं और अर्पणा जी एक साथ दो या तीन कैनवस पर एक साथ कार्य शुरु कर देती हैं अगर कभी इन्हें कैनवस पर पहले कोट में ही मैट का प्रभाव लेना होता है तो एक तिहाई तारपीन और एक चौथाई अलसी

का तेल प्रयोग करती हैं बाद में ऊपर से ही जो कोट करती हैं वह अलसी के तेल से ही करती हैं। अर्पणा जी ने तेल रंगों के अलावा कुछ अन्य माध्यमों में भी कार्य किया है जैसे अम्ल लेखन एचिंग, ग्लास पेंटिंग आदि।

अम्ल लेखन एचिंग करने की तकनीक

अम्ल लेखन करने की तकनीक में सबसे पहले जस्ते की प्लेट पर काले रंग से वार्निश (स्टंप आउट) करते हैं जब जस्ते की प्लेट काली हो जाती है तब प्लेट की निचली सतह पर स्प्रिट में रेजिंग घोलकर लगाते हैं जिनका घोल सूखने के पश्चात इस काली सतह पर किसी नोक दार वस्तुओं जैसे कि प्रकार आदि से खुरच कर रेखांकन करते हैं। लेखांकन करने के पश्चात पानी में नाइट्रिक एसिड मिलाकर एक मिश्रन तैयार करते हैं इस मिश्रण में चित्र जस्ते की प्लेट डुबो दी जाती है पानी में डालने के बाद प्लेट की खुरची हुई सतह से बुलबुले उठते हैं। इन बुलबुलों को कबूतर के पंख से हटाते हैं। कबूतर का पंख इसलिए लेते हैं क्योंकि यह एसिड में गलता नहीं है और अत्यंत कोमल होने से रेखांकन को क्षति नहीं पहुंचती। खुरची रेखाएं एसिड से कट जाती है तब प्लेट को साफ पानी से धोकर काली वार्निश को प्लेट पर अख़बार के द्वारा साफ कर देते हैं अब प्लेट पर बनी गहरी रेखा को छपाई की काली स्याही से भर देते हैं और प्लेट को ऊपर से अखबार के कागज आदि से साफ कर देते हैं ताकि रेखांकन में भरी स्याही छूट न जाए प्लेट को साफ करने के बाद लेखांकन में स्याही भरी रह जाती है और अंत में प्लेट से किए गए कागज पर एचिंग प्रेस द्वारा प्रिंट छापते हैं यह प्रक्रिया तब तक दोहराई जाती है जब तक उचित प्रभाव युक्त प्राप्त नहीं हो जाता।

ग्लास पेंटिंग करने की तकनीक के बारे में अर्पणा कौर जी ने बताया कि ग्लास पेंटिंग फ्लेक्सी ग्लास पर की जाती है सबसे पहले एक कागज पर रेखांकन कर लेती थी और कागज को शीशे के पीछे रखकर शीशे पर काले लाइनर से रेखांकन कर देती थीं। काले लेखांकन के सूखने के बाद दूसरे रंगों से चित्र को पूरा करते थे प्रारंभ में अर्पणा जी आयातित कला सामग्री रंग आदि नहीं खरीद पाती थी इसलिए शुरू से ही कैमलिन के आर्टिस्ट क्वालिटी वाले रंग ही प्रयोग करती रही है इसलिए आज भी इनके सन 1970 तक के चित्र भी ताजी लिए हुए हैं। शुरू में अर्पणा जी कैनवस स्वयं तैयार करती थी जैसे कैनवस को स्वयं ही कोर्ट करके तैयार करना आदि लेकिन इस सब में काफी समय लग जाता था इसलिए कैमलिन के ही कैनवस प्रयोग करती रही आरंभ में इनके चित्र बिकते नहीं थे लेकिन फिर भी उन्होंने कभी कला सामग्री की गुणवत्ता पर समझौता नहीं किया हमेशा ही इनकी माता श्रीमती अजीत कौर जी ने इन्हें प्रोत्साहित किया और कभी भी कला सामग्री से समझौता नहीं करने दिया यह सदैव ही आर्टिस्ट क्वालिटी के रंग ही प्रयोग करने की सलाह देती हैं लगभग 15 साल पहले अर्पणा जी विंसर न्यूटन के रंग प्रयोग करने लगी थीं पहला कोट भारतीय रंग से कर देती फिर फाइनल कोट विनसार न्यूटन से करतीं। इसके बाद और भी अच्छी क्वालिटी की कंपनी इंग्लैंड की एक कंपनी

माइकल हार्डिंग के होते हैं क्योंकि इस कंपनी के रंगों के जो है वह बहुत ही चमकदार व उच्च क्वालिटी के हैं। कुछ रंग जर्मन की ल्यूकर्स कोशमिंग कम्पनी के प्रयोग करती हैं। अर्पणा जी को अधिक पसंद है। नहीं है कुछ ऐसी अधिक पसंद है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. यह आलेख, लेखक डॉ राजकुमार जयंत के अर्पणा कौर जी के साथ साक्षात्कार पर आधारित है।